आधुनिक विकास की अवधारणा

प्रो0 ब्रजेश पति त्रिपाठी

प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज,पटना सिटी, पटना

महाविद्यालय निरीक्षक (कला व वाणिज्य), पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय,पटना

सारांश

विकास शब्द का प्रयोग आमतौर से आर्थिक विकास दर में वृद्धि और समाज के आधुनिकरण के प्रक्रिया के सम्बन्ध में किया जाता है। व्यापक अर्थ में विकास से आशय है-उन्नति प्रगति, कल्याण और उत्तम जीवन की अभिलाषा के विचारों का प्रसार अनेक लोग विकास को सड़क, पानी, बिजली, अस्पताल उद्योग जैसी परियोजनाओं को पूरा कसे से जोड़कर देखते हैं। किन्तु इस प्रक्रिया में समाज के कुछ लोग लाभान्वित होते हैं और शेष लोगों को अपने घर-परिवार, जमीन, जीवन- शैली से बिना किसी मुआवजे नुकसान उठाना पड़ता है। विकास एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। इससे मानव के केवल आर्थिक जीवन में ही परिवर्तन नही होता, बल्कि इससे सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं में भी आमूल बदलाव आता है। आज का समय विकास का है। प्रस्तुत लेख में हम विकास के अभिप्राय,उद्देश्य, विकास में सरकार की भूमिका विकास के विभिन्न घटकों इत्यादि की विस्तार से चर्चा की गई है।

शब्द कुंजी: विकासशील,कल्याणकारी,पूंजी,तकनीकी,तकनीकी,समावेशी,औद्योगिक।

आज का समय विकास का है। इसलिए विकास की अवधारणा ने समस्त विकासशील देशों को प्रभावित किया है। यह अवधारणा अपेक्षाकृत नया है और 1960 के बाद इसका महत्व बढ़ा है। द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45)के बाद एशिया,अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अधिकांश देश साम्राज्यवादी शासन से स्वतंत्र हुए और विकास की चुनौतियो का सामना कर रहें है। प्रस्तुत पत्र में हम विकास के अभिप्राय, उद्देश्य, विकास में सरकार की भूमिका, विकास के विभिन्न घटकों तथा निष्कर्ष की विवेचना करेंगे।

1. विकास का अभिप्राय:- विकास की अवध ाारणा न तो नवीन है न ही प्राचीन विकास, एक निरन्तर परिवर्त्तनशील और गतिशील प्रक्रिया है। सभ्यता के विकास के साथ इसके विभिन्न रूप और अवधारणा रही है। उन्नीसवीं सदीं की तुलना में आज विकास की प्रकृति अलग प्रकार की है। विकास एक बहुआयामी अवधारणा है। जिसकी निश्चित और सर्वमान्य परिभाषा गढ़ना कठिन है। फिर भी विद्वानों ने इसकी अवधारणा का अर्थ बताने का प्रयास किया है। आक्सफोर्ड शब्दकोष ने विकास को उच्चतर पूर्णतर और प्रौढ़ स्थिति की ओर बढ़ना बताया है। जेराल्ड ई. काइडन के अनुसार विकास शब्द का कोई विशिष्ट अर्थ नही है। अर्थशास्त्री इसे आधुनिक उत्पादकता के रूप में परिभाषित करते हैं। समाजशास्त्री इसका उपयोग सामाजिक परिवर्त्तन से करते है, राजनीतिक विचारक इसे लोकतांत्रीकरण राजनीतिक क्षमता अथवा विकासशील सरकार के रूप में प्रयोग करते है। प्रशासक इसे अधिकारी तंत्र, प्रशासनिक कुशलता एवं क्षमता के रूप में मानते है।

1. एडवर्ड वीडनर के शब्दों में 'विकास गतिशील है जो सदैव चलता रहता है। विकास मन की स्थिति प्रवृति और एक दशा है जो एक निश्चित लक्ष्य के बजाय एक विशिष्ट दिशा में परिवर्त्तन की गति है।
2. रिग्ज ने विकास को विवर्त्तन के उभरते स्तर द्वारा सम्भाव्य सामाजिक प्रणालियों की वृद्धिमान स्वायत्तता (विवेक) की प्रक्रिया के रूप में माना है।

3. इस परिभाषा में दो शब्द 'विवेक' और 'विवर्त्तन' महत्वपूर्ण हैं। विवेक का अर्थ है विकल्पों में से चुनाव करने की क्षमता और विवर्त्तन का तात्पर्य सामाजिक प्रणाली में विशिष्टीकरण की मात्रा।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि विकास परिवर्त्तन की वह स्थिति है जिसके द्वारा परम्परागत पूर्ण स्थिति से हम आधुनिक स्थिति पर आते है। विकास सामाजिक गतिविधियों से प्रभावित होता है, जो सदैव राष्ट्रीय विकास एवं सामाजिक आर्थिक प्रगति की ओर निर्देशित होती है।

2. विकास का उद्देश्यः- विकास बहुमुखी प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य समाज का लोक कल्याण है तथा नागरिकों को बेहतर जीवन प्रदान करना है। अतः समस्त विकासशील राष्ट्रों का उद्देश्य लगभग एक जैसा होता है। जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्मिलित हैं:-

1. राष्ट्र का उत्कृष्ट विकास।
2. राष्ट्र की आय में वृद्धि।
3. नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराना।
4. आर्थिक सामाजिक क्षेत्र में प्रगति करना।
5. देश को आत्मनिर्भरता प्रदान करना।
6. देश की जनता का जीवन स्तर विकसित करना।
7. विकास कार्यो में जनता की सहभागिता प्राप्त करना।
8. नीतियों व योजनाओं को लागू करना।
9. कानून व्यवस्था में सुधार करना तथा न्याय प्रदान करना।
10. प्रशासन को समय की चुनौतियों तथा कठिनाईयों का सामना करने के योग्य बनाना। साथ ही नवीन प्रशासनिक प्रबंधकीय तकनीकों को स्वीकार करना।
11. विकास कार्यो के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहायता प्रदान करना।
12. लोक सेवकों को आधुनिक प्रशिक्षण प्रदान करना इत्यादि।

3. विकास में सरकार की भूमिकाः-

सरकार व प्रशासन का आपस में घनीष्ठ सम्बन्ध होता है। दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं तथा एक दूसरे की सहायता करते है। सरकार जिन लोक कल्याणकारी एवं महत्वपूर्ण कार्यो नीतियों और योजनाओं को निर्धारित करती है। उन्हें लागू करने का दायित्व प्रशासन का होता है। प्रशासन गतिशीलता का प्रतीक है और सरकार की इच्छा को साकार रूप प्रदान करता है। आज के जीवन में प्रशासन का विशेषकर विकास प्रशासन का महत्व बढ़ता जा रहा है और विकास प्रशासन-शासन व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु बन गया है। किसी भी देश के विकास में सरकार की विशेष भूमिका होती है। विकास के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सरकार की प्रमुख भूमिका निम्नवत है:-

1. आन्तरिक शान्ति एवं सुरक्षा बनाये रखना।
2. बाह्य आक्रमण से देश की रक्षा करना।
3. स्थायी सरकार की स्थापना करना।
4. राजनीतिक स्थिरता प्रदान करना।
5. उचित प्रशासनिक व्यवस्था का प्रबन्ध करना।
6. सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों में उचित समन्वय स्थापित करना।
7. पूंजी निवेश का उपयोग राष्ट्रहित में करना।
8. वित्तीय संसाधनों की खोज करना और राष्ट्रीय विकास में उसका उपयोग करना।
9. विकास कार्यो में सहभागिता को प्रोत्साहन देना।
10. मनोवैज्ञानिक व भौतिक सुरक्षा का वर्धन।
11. सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना।
12. आधुनिक कार्य पद्धतियों का विकास एवं उन्हें अपनाना।

13. लोक सेवाओं की कार्य क्षमता बढ़ाना और उचित प्रबन्ध करना।

14. अन्तराष्ट्रीय समुदाय का सहयोग प्राप्त करना तथा विश्व में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करना।

4. विकास की समस्याएँ:- प्रत्येक विकासशील देश के लिए विकास आवश्यक है किन्तु इसको सम्पन्न करने में कुछ समस्याएँ आती है। जो इस प्रकार है।

(i) आर्थिक संसाधनों की कमी। विकास के लिए धन की कमी और उस कमी को मितव्ययी ढ़ग से उसे प्राप्त करने की है।

(ii) देश में राजनीतिक स्थिरता का अभाव अर्थात विकास कार्य के लिए देश में राजनीतिक और शान्ति का होना अनिवार्य है।

(iii) विकास कार्य में जन सहभागिता का अभाव देखने को मिलता है।

(iv) विकास कार्य के लिए व्यवस्थित तथा विकास प्रशासन की आवश्यकता होती है।

(v) समस्या यह देखने को मिलती है कि उचित तथा सुव्यवस्थित शिक्षा का अभाव।

(vi) जो विकासशील देशों में देखने को मिलती है कि रूढ़िवादी परम्परागत समाज में नवाचार लाने की है।

(vii) आधुनिक तकनीकी ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण नवीन प्रशासनिक कार्य पद्धति आदि के अभाव में विकास कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

विकास एक अनवरत अनवरत प्रक्रिया है। विकास का कार्य शान्तिपूर्ण वातावरण में ही सम्भव है। विकास के लिए राजनीतिक स्थिरता,प्रशासनिक कुशलता और स्थिरता,उचित सांस्कृतिक और नियोजन व्यवस्था,जन सहभागिता, सुदृढ़ आर्थि नीति,अनुकूल आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक पर्यावरण आदि आवश्यक है।

5. विकास के विभिन्न घटक:- विकास की चर्चा केवल आर्थिक विकास के रूप में नहीं करना चाहिए। इसके राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक, प्रशासनिक, स्थायी, समावेशी और वास्तविक विकास के घटक भी होते है। यद्यपि विकास के आर्थिक, सामाजिक,सांस्कृतिक,स्थायी, समावेशी,वास्तविक और राजनीतिक घटकों के बीच विभाजन रेखा खीचना सम्भव नही है, फिर भी वे सब मिलकर विकास की प्रक्रिया में योगदान देते है। अत: विकास एक जटिल प्रक्रिया है जिसकी सामाजिक, राजनीतिक,आर्थिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक सीमाएं है।

(i) राजनीतिक विकास:- राजनीति शास्त्र में विकास शब्द के अर्थ पर विद्वत एकमत नही हो पाए है किन्तु इस संबंध में दो प्रमुख दृष्टिकोण कहे जा सकते है। प्रथम कुछ लोग राजनीतिक विकास का अर्थ राजनीतिक रूप से आधुनिकता की प्राप्ति से लगाते है और आधुनिक स्थिति वे उसे मानते है जो पाश्चात्य देशों ने प्राप्त कर ली है।

5. इसमें तीन तत्व सूचकांक के रूप में लिए जाते रहे है।

6. राजनीति व्यवस्था में जनता की अभिवृत्ति में मौलिक परिवर्तन होना राजनीतिक गतिविधियों मे भाग लेने के लिए सभी लोगों को समान अवसर मिलता, समाज के सभी व्यक्ति एक से कानूनों के अनुसार शासित होते हों और उपलब्धि के आधार पर ही राजनीतिक भर्ती का होना। राजनीतिक व्यवस्था सक्षम और समर्थ होनी चाहिए। राजनीतिक भूमिकाओं एवं संरचनाओं में विभिन्नीकरण होना चाहिए अर्थात राजनीतिक संरचनाएं अलग-अलग कार्यो के लिए पृथक-पृथक होने के बावजूद उनमें समन्वय स्थापित करने की क्षमता होनी चाहिए। ल्यूसियन पाई ने समानता, क्षमता और विभिन्नीकरण को राजनीतिक विकास की लक्षण समिष्ट कहा है। द्वितीय हंटिंगटन ने राजनीतिक विकास के तीन स्तरो- (क) सत्ता की बुद्धि संगतता का स्तर,

(ख) कार्यात्मक विशिष्टीकरण का स्तर एवं
(ग) अभिवृद्ध सहभागिता का स्तर ही चर्चा करते हुए कहा है कि विकास की यह प्रक्रिया तभी सम्पन्न होती है, जब यह तीनों सुनिश्चित प्रचालन या क्रियात्मक स्तर क्रमिक रूप से उपलब्ध किए जाए अर्थात् पहले के बाद दूसरा और फिर तीसरा स्तर आ सकता है। उसमें स्पष्ट किया है कि इन तीनों का एक दूसरे के उपर-नीचे या साथ-साथ प्रचलन घातक हो सकता है और उसमें राजनीतिक विकास नहीं, बल्कि राजनीतिक पतन आ सकता है।

7. संक्षेप में राजनीतिक विकास का अर्थ स्वयं राजनीतिक व्यवस्था में समाज की राजनैतिक समस्याओं के निस्तर समाधान तथा ऐसी नई नीति में पहल करने और उन्हें क्रियान्वित करने की क्षमता से लिया जाता है। जिसमें मानकीय तथा संस्थान मूलक दोनों ही दृष्टिकोण शामिलहै। राजनीति विकास की स्थिति में राजनीतिक व्यवस्था स्वयं की मौलिक समस्याओं से निपटने की क्षमता रखती है तथा जनता की मांगों के अनुरूप बनने हेतु सक्षम होती है। राजनीतिक विकास में आर्थिक -औद्योगिक विकास,आधुनिकीकरण, राष्ट्रनिर्माण, लोकतन्त्र की स्थापना, राजनीतिक स्थायित्व आदि बाते सम्मिलित है।

(ii) आर्थिक विकासः- अर्थशास्त्र की दृष्टि से विकास शब्द के दो अर्थ लगाये जा सकते है। एक टेक ऑफ की स्थिति, जहॉ से अर्थिक व्यवस्था स्वतः ही आगे बढ़ती रहती है और दूसरे इस स्थिति तक पहुँचने की प्रक्रिया। अतः टेक ऑफ की स्थिति पाने पर विकसित और उससे पहले विकासशील अवस्था कही जाती है।

विकासशील देशों का आर्थिक विकास आज सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। आर्थिक विकास एक लम्बी परिवर्तन की प्रक्रिया है, जिसका कोई संतोषजनक एवं सर्वमान्य सूचक निश्चित करना सम्भव नही है। प्रो0 लिप्से के अनुसारआर्थिक विकास के कुछ सम्भावित माप है। जैसे प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति पूँजी, प्रति व्यक्ति बचत, सामाजिक पूंजी, रहन सहन का स्तर, राष्ट्रीय आय इत्यादि। आर्थिक विकास का प्रमुख उद्देश्य देश का आर्थिक दृष्टि से विकास करना है।

(iii) सामाजिक विकासः- सामाजिक विकास से तात्पर्य समाज में रहने वाले लोगों के सामाजिक जीवन में परिवर्त्तन लाते हुए उन्नति करने से है। इसमें वस्त्र, भोजन, आवास, चिकित्सा सुविधाएँ, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा आदि बातें सम्मिलित होती है।

(iv) सांस्कृतिक विकासः- संस्कृति का अर्थ किसी समुदाय की जीवन शैली है जो नागरिक का अनेक आर्दशात्मक मूल्य प्रदान करती है। इन मूल्यों से प्रशासन भी अछूता नहीं है। डलैडल के अनुसार यदि प्रशासनिक संस्कृति रूपान्तरण के कारण हुई प्रगति से सामंजस्य स्थापित नही करती तो सामाजिक असंतोष और हिंसा से सामाजिक ढांचा अन्ततः धवस्त हो जायेगा। सामाजिक संस्कृति की अनुकूल क्षमता ही प्रशासन में लोक सामंजस्य और व्यवस्था बनाये रखने में प्रमुख भूमिका निभाती है।

(v) प्रशासनिक विकासः- लोक प्रशासन की दृष्टि से कोई भी राज्य तब तक विकसित नही माना जा सकता है जबतक कि उसके पास सार्वजनिक मामलों का प्रभावशाली प्रशासन करने की व्यवस्था के रूप में विधिसम्मत लोक सेवा (नौकरशाही) नही हो। किसी भी देश में नौकरशाही ही राजनीतिक व्यवस्था को चलायमान करने का माध्यम होती है। इसलिए नौकरशाही की प्रकृति, आकार और आधार राजनीतिक व्यवस्था के प्रमुख लक्षण माने जा सकते है। प्रशासनिक विकास प्रशासन का एक महत्वपूर्ण तत्व/अंग है। यह परिवर्त्तन और गतिशील अवधारण है, जो समाज में आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील है। इसका सम्बन्ध विकासशील देशों के प्रशासन से है। इसमें प्रशासनिक संरचनाओं, संगठनों, नीतियों, प्रक्रियाओं आदि में परिवर्त्तन करके प्रशासन को समयानुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है।

(vi) सतत विकासः- सतत विकास शब्द से यह बात स्पष्ट होती है कि विकास ऐसा होना चाहिए,जो निरन्तर चलता रहे अर्थात सतत विकास एक ऐसी टिकाऊ प्रक्रिया है, जिसमें उपलब्ध संसाधनों का इस भांति उपयोग किया जाय कि वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही भावी पीढ़ी की जरूरतों में कटौती न होने पाये। इसमें पर्यावरण को क्षति पहुँचाये बिना संसाधनों का कुशलतम उपयोग किया जाता है।

इन्टरनेशनल यूनियन फॉर कन्सवेंशन ऑफ नेशन्स ने 'विश्व संरक्षण रणनीति शीर्षक से प्रस्तुत अपनी रिर्पोट में पहली बार सतत् विकास शब्द का प्रयोग किया था। उसके बाद सन 1987 में वर्ल्ड कमीशन आन एनवायरमेन्ट एण्ड डेवलपमेन्ट ने 'आवर कामन "यूचर' नामक रिर्पोट में इस शब्द की परिभाषा और कार्य पद्धति की व्यवस्था की है। रिर्पोट के अनुसार सतत् विकास वह विकास है जिसके अन्तर्गत भावी पीढ़ियों के लिए पूर्ति करने की क्षमताओं से समझौता किये बिना वर्त्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है अर्थात् पर्यावरण की सुरक्षा के बिना विकास को निर्वघ्नीय नही बनाया जा सकता है। अन्ततः आर्थिक विकास और पर्यावरणीय सुरक्षा के मध्य एक वांछित सन्तुलन बनाये रखना ही सतत् विकास है।

(viii) समावेशी विकासः- समावेशी विकास ऐसे आर्थिक विकास की ओर इंगित करता है, जिसमें सकल घरेलू विकास की उच्च दर जनित राष्ट्रीय आय का लाभ समाज के सबसे कमजोर वर्गो तक समान रूप तक पहुँचे, भौगोलिक रूप से देश के सभी क्षेत्र विकास की दौड़ में साथ-साथ चलें, आर्थिक असमानताएँ कम से कम हो तथा स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छ, पेयजल, स्वच्छ पर्यावरण, पौष्टिक भोजन जैसी बुनियादी सुविधाओं तक सभी की पहुँच समान रूप से हो।

विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित इण्डिया डेवलपमेन्ट रिर्पोट 2006 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि विकास प्रक्रिया आर्थिक क्रियाओं के योग का माप मात्र नही है, बल्कि आर्थिक विकास की समावेशिता का मूल्यांकन है, जिसमें आर्थिक लाभों के वितरण पर ही ध्यान नहीं दिया जाता,वरन् सुरक्षा सशक्तिकरण तथा पूर्ण सहभागिता की भावना, जिसका लोग सामाजिक जीवन में आनन्द उठाते है, जैसे कारकों पर भी घ्यान दिया जाना महत्वपूर्ण है। ग्यारही पंचवर्षीय योजना की धुरी तीव्र एवं अधिक समावेशी विकास की ओर पर केन्द्रित है। ग्यारही योजना के दृष्टिकोण में कहा गया है कि समावेशी आर्थिक विकास की रणनीति का स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छ पेयजल, जैसी बुनियादी सुविधाओं तक अधि संख्य लोगों की पहुँच सुनिश्चित करने के प्रयासों पर केन्द्रित होनी चाहिए। तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह का स्पष्ट मत है कि ऐसा विकास अर्थहीन है जिसका लाभ समाज के निर्धनतम लोगों तक नही पहुँचता है। इसी भवना के तहत इस बात पर अधिक बल दिया जा रहा है कि केवल उच्च आर्थिक सम्वृद्धि दर ही पर्याप्त नहीं है, अपितु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि सही अर्थो में विकास का लाभ इन तक पहुँचे, जो दबे कुचले तथा साधनहीन है। इसलिए अब विकास की रणनीति वास्तविक लाभार्थियों, जो निर्धनता रेखा से नीचे रह रहे हैं, को रोजगार के अवसरों में वृद्धि करके तथा सामाजिक सेवाएं बेहतर ढ़ग से प्रदान करके उनके जीवन स्तर में सुधार लाने पर केन्द्रित है।

(ix) वास्तविक विकासः- वास्तविक विकास का अर्थ तो सामान्य व्यक्ति को भोजन, पानी उपलब्ध कराना तथा जीवन व उसके अधिकारों की सुरक्षा करना है। जब कोई वंचित, दलित, आदिवासी सुरक्षा बलों द्वारा किये गये उत्पीड़न की रपट लिखाने के लिए थाने जा सके तथा उसका एफ.आई.आर. दर्ज किया जाय और वह कानून के समक्ष समानता के आधार पर न्याय की उम्मीद कर सके तो भी उसे वास्तविक विकास माना जा सकता है। अभी जो स्थिति है उसमें न्याय काफी कुछ वकील की फीस पर निर्भर करता है।

जबकि वही रसूक वाले लोग अपनी सत्ता ताकत तथा सुरक्षा बलो (प्रशासन) को वर्दी का फायदा मिलता है।

मानव केन्द्रित विकास से प्रकृति केन्द्रित विकास की ओर ले जाने वाला विकास ही सही मायनों में विकास होता है। समाज की कमजोर कड़ी का जितना विकास होगा वही वास्तविक विकास होगा। गांव, किसान, नदी, पहाड़, पशु जबतक विकास की केन्द्रीय धूरी में नही होंगे। तबतक होने वाला विकास विनाश को ही आमंत्रित करेंगें। आज प्रकृति केन्द्रित विकास की आवश्यकता है। वास्तविक विकास तभी होगा जब पुरानी सत्ता संरचना का परिवर्त्तन इस रूप में हो कि सत्ता संरचना और आर्थिक प्रणाली दोनों लोकतान्त्रिक नियंत्रण में हो। ऐसा होने के लिए यह आवश्यक है कि अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र,विज्ञान एवं ज्ञान के अन्य क्षेत्रों के विद्यार्थी अपनी परम्परा करना शुरू करें। विरासत में अपनी संस्थाओं को हम इस रूप में बदले की बेहतर दुनिया बन सकें।

निष्कर्षः-

विकास की अवधारणा जीवन की गुणवत्ता से जुड़ी हुई है। कुछ वर्षो पूर्व विकास को आर्थिक एवं औद्योगिक उन्नति का पर्याय माना जाता था किन्तु अब यह स्वीकार किया गया है कि केवल आर्थिक या औद्योगिक उन्नति से जीवन की उत्कृष्टता प्रमाणित नही होती है। इसलिए आजकल मानव विकास पर बल दिया जा रहा है। विडम्बना यह है कि मानव विकास के सम्बन्ध में मनुष्य के अघ्यात्मिक एवं नैतिक उन्नयन या चारित्रिक सुधार की बात कोई नहीं करता। विकास के अधिक न्यायपूर्ण, टिकाऊ और लोकतान्त्रिक माडल की खोज जारी है। इस प्रक्रिया में समानता, लोकतंत्र सहभागिता अधिकार जैसी अवधारणाओं की पूर्ण व्याख्या एवं समायोजन एक चुनौतिपूर्ण कार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. जेराल्ड ई0 काइडन-द डायनामिक्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 1971 पृ0सं0 15-20
2. एडवर्ड वीडनर-''डवलपमेंट एडमिनिशट्रशन: ए न्यू फोकस ऑफ रिसर्च'' फेरल हेडी एवं सिविल स्टोक (सम्पादित) पेपर्स आन कम्पेरेटिव पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन''
3. फ्रेड डब्लू रिज-'द आइडिया आफॅ डवलपमेन्ट एडमिनिस्ट्रेशन'',एडवर्ड वीडनर (सम्पादित) डवलपमेन्ट एडमिनिस्ट्रेशन इन एशिया 1970 पृ0 72
4. फेड डब्लू रिज-''फर्दर कनिसडरेशन ऑफ डवलपमेन्ट''ए एडमिनिस्ट्रेशन चेंज, जुलाई- दिस्म्बर 1976 पृ0 2
5. रेने लेमार्चण्ड-पॉलिटिकल क्लाइन्टोलिज्म एण्ड ऐथनिसिटी इन ट्रापिकल अफ्रीका: कम्पीटिंग सालिडेटिरीज इन नेशन बिल्डिंग,अमेरिकन पॉलिटिकल साइज रिव्यू अंक 66,भाग-1,1972 पृ0 87
6. न्यूसियन पाई (सम्पादित)''कम्यूनिकेशन एण्ड पॉलिटिकल डवलपमेन्ट प्रिस्टन एनिवर्सिटी प्रेस 1963,पृ0 19
7. सेम्युएल पी, हंटिगंटर्न-''पॉलिटिकल डवलपमेन्ट एण्ड पॉलिटिकल डिके'' वर्ल्ड पॉलिटिक्स, खण्ड-17 अप्रैल 1965 पृ0 386-93
8. विलियम, रास्टाव, दस्टेवेज ऑफ इकानामिक्स डवलपमेन्ट,1960 पृ0 36-58
9. इसी आधार पर नवोदित एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के देशो को विकासशील देश कहा गया है।
10. द यूनाइटेड नेशन्स टुडे, 2008 पृ0 214-234
11. आर्थिक सर्वेक्षण 2010-11, वित्त मंत्रालय-भारत सरकार अघ्याय-12 पृ0 291-311